

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी



पिकी कुंडू

हेल्दी रहने के लिए जरूरी टिप्स (हेल्थ अवेयरनेस के लिए - मेडिकल सलाह का कोई दूसरा ऑप्शन नहीं है)

फिट रहने के लिए जरूरी बातें



दिल को हेल्दी रखने के लिए

1. रोजाना वॉकिंग/योग
2. कम नमक, कम तेल
3. लहसुन, फल, सब्जियां फायदेमंद हैं
4. सीने में दर्द, सांस लेने में तकलीफ हो, तो तुरंत हॉस्पिटल जाएं

वजन कंट्रोल करने के लिए

1. बैलेंस्ड डाइट
2. कम चीनी, जंक फूड
3. रेगुलर एक्सरसाइज
4. छछ, गर्मपानी से मदद मिल सकती है

खांसी, अस्थमा, सांस लेने में दिक्कत

1. भाप लेना
2. गर्मपानी

3. स्मॉकिंग पूरी तरह से छोड़ दें

4. अगर आपको गंभीर समस्या है तो डॉक्टर से सलाह लें

किडनी स्टोन से बचने के लिए

1. खूब पानी पिएं
2. ज्यादा नमक और जंक फूड से बचें
3. छछ फायदेमंद है
4. अगर आपको स्टोन है, तो जांच और एक्सपर्ट ट्रीटमेंट जरूरी है

दांतों और मसूड़ों के लिए

1. दिन में दो बार ब्रश करें
2. नमक-गर्मपानी के गरारे
3. तंबाकू से बचें
3. डॉ. पीठ दर्द, स्पोण्डिलाइटिस

1. रेगुलर एक्सरसाइज और स्ट्रेचिंग

2. वजन कंट्रोल

3. कैल्शियम - विटामिन D चेक

4. तेज दर्द में खुद से दवा न लें

डायबिटीज

1. रेगुलर शुगर चेक
2. कम शुगर, कम कार्बोहाइड्रेट
3. वॉकिंग, योग
4. डॉक्टर की बताई दवाइयां खुद से बंद/कम न करें

बहुत जरूरी सलाह

* "5 मिनट में ठीक हो जाता है", "पक्की बीमारी खत्म हो जाती है", "दवा तुरंत लेना बंद करें" जैसे दावे खतरनाक हैं

सही जानकारी + एक्सपर्ट सलाह = सुरक्षित सेहत --- सेहत ही असली दौलत है।

क्या आप ऑफिस में काम करते - करते थकावट महसूस करते हैं, स्ट्रेस में हैं? 3 टिप्स, तुरंत रिलैक्स करें - नया जोश पाएं

पिकी कुंडू

सुबह उठते ही आपके दिमाग में ऑफिस के कामों की लिस्ट बनने लगती है। घर के कामों को करके ऑफिस पहुंचने में सुबह 9.30 या 10 बज जाते हैं। तब तक, दिन में आपको कौन-कौन से काम पूरे करने हैं, इसका प्लान आपके दिमाग में अच्छी तरह बैठ जाता है। फिर, जब आप ऑफिस जाते हैं, तो आप थोड़ा फ्रेश महसूस करते हैं और तुरंत काम शुरू कर देते हैं। अक्सर, जब हम काम करने बैठते हैं, तो हमें पता ही नहीं चलता कि हमें पानी पीने की जरूरत है।

कभी-कभी, काम का बोझ इतना ज्यादा होता है कि हमें पता ही नहीं चलता कि दोपहर हो गई है और खाने का समय हो गया है। हर समय कुर्सी पर बैठे रहने से हमारी आंखें, हाथ, पीठ और गर्दन थक जाती हैं और हमें एक तरह का स्ट्रेन हो जाता है।

कभी-कभी हम इस स्ट्रेन को दूर करने के लिए चाय - कॉफी पीते हैं या कभी - कभी टहलने जाते हैं। लेकिन कुछ आसान चीजें करने से इस स्ट्रेन को दूर करने में मदद मिल सकती है।



1. आंखों की एक्सरसाइज लगातार लैपटॉप देखने से आपको आंखों पर जोर पड़ने का चांस रहता है। ऐसे में, अपनी आंखों को लैपटॉप से दूर रखें और कुछ आसान एक्सरसाइज करें। अपनी आंखों को पुतलियों को ऊपर - नीचे, बाएँ - दाएँ, गोल - गोल घुमाएँ। इससे आंखों का तनाव कम करने में मदद मिलती है।

2. जब आप बोर होते हैं तो टी ब्रेक जब आप काम के बाद बोर होते हैं, तो आप अपने दोस्तों के साथ कैटीन में चाय या कॉफी पीने जाते हैं। ऐसे समय में, चाय और कॉफी के साथ - साथ आप कुछ जंक फूड भी खा लेते हैं। हालाँकि, ऐसा करना आपके सेहत के लिए बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। इसका बजाय, हमेशा कोई फल या अनाज खाना बेहतर होता है।

3. बैटकर साँस लेने की एक्सरसाइज और एक्सरसाइज करें साँस लेने और छोड़ने से आपको रिलैक्स महसूस होता है। काम करते समय ब्रेक जरूर लें। इससे काम का स्ट्रेस कम करने में मदद मिलेगी। खड़े होकर या कुर्सी पर बैठकर कुछ आसान योगा एक्सरसाइज जरूर करें।

प्रमुख औषधीय गोंद - लाभ एवं उपयोग

पिकी कुंडू

1. गोंद कटीरा गुण/लाभ: * शरीर को ठंडक पहुंचाता है * कब्ज व एरिस्टी में लाभकारी * पेशाब में जलन व लू से बचाव
2. गोंद बकूल गुण/लाभ: * पावन शक्ति बढ़ाता है * दस्त व कब्जोरी में लाभ * मूँरु के छालों में फायदेमंद
3. गोंद मोरिंसा / सरुन गोंद गुण/लाभ: * जोड़ों के दर्द में लाभकारी * लंबे समय तक ठंडक देता है * सूजन को कम करता है
4. गोंद धोरा / डाक गुण/लाभ: * घाव भरने में सहायक सूजन व जलन कम करता है
5. गोंद ग्राम गुण/लाभ: * कब्जोरी दूर करता है * दीर्घ ब्रत बढ़ाता है * पावन सुधारता है
6. गोंद नीम गुण/लाभ: * रक्त को शुद्ध करता है * त्वचा रोगों में लाभ * संक्रमण से बचाव
7. गोंद पीपल गुण/लाभ: * पावन शक्ति बढ़ाता है * दस्त व कब्जोरी में लाभ * मूँरु के छालों में फायदेमंद
8. गोंद बकूर गुण/लाभ: * पुरुष कब्जोरी में लाभ * गुरुकुंठ (अर्बुद) में सहायक
9. गोंद बेत गुण/लाभ: * दर्द व पेट दर्द में लाभ * त्रिंती को गुरुकुंठ करता है
10. गोंद गुरुकुंठ गुण/लाभ: * मोटापा कम करने में सहायक * जोड़ों के दर्द में लाभ
11. गोंद लोबान गुण/लाभ: * तनाव कम करता है * पूजा व श्राद्ध दोनों में उपयोगी
12. गोंद श्रोत गुण/लाभ: * शरीर को शुद्ध करता है * त्वचा रोगों में लाभ * संक्रमण से बचाव
13. गोंद शलकी गुण/लाभ: * कब्जोरी दूर करता है * प्रयोग विधि: काढ़ा या चूर्ण बनाकर सेवन
14. गोंद हींग गुण/लाभ: * सूजन कम करता है * प्रयोग विधि: दूध के साथ सेवन करें
15. गोंद अर्जुन गुण/लाभ: * हृदय के लिए लाभकारी * रक्तवायु संतुलित करता है
16. गोंद देत गुण/लाभ: * रक्तवायु संतुलित करता है * प्रयोग विधि: काढ़ा बनाकर सेवन करें
17. गोंद झन्ती गुण/लाभ: * सूजन कम करता है * प्रयोग विधि: चूर्ण या कुत्ला करें
18. गोंद देत गुण/लाभ: * सूजन कम करता है * प्रयोग विधि: चूर्ण या कुत्ला करें
19. गोंद झन्ती गुण/लाभ: * सूजन कम करता है * प्रयोग विधि: चूर्ण या कुत्ला करें
20. गोंद झन्ती गुण/लाभ: * सूजन कम करता है * प्रयोग विधि: चूर्ण या कुत्ला करें



7. गोंद पीपल गुण/लाभ: * पावन शक्ति बढ़ाता है * दस्त व कब्जोरी में लाभ * मूँरु के छालों में फायदेमंद
8. गोंद बकूर गुण/लाभ: * पुरुष कब्जोरी में लाभ * गुरुकुंठ (अर्बुद) में सहायक
9. गोंद बेत गुण/लाभ: * दर्द व पेट दर्द में लाभ * त्रिंती को गुरुकुंठ करता है
10. गोंद गुरुकुंठ गुण/लाभ: * मोटापा कम करने में सहायक * जोड़ों के दर्द में लाभ
11. गोंद लोबान गुण/लाभ: * तनाव कम करता है * पूजा व श्राद्ध दोनों में उपयोगी
12. गोंद श्रोत गुण/लाभ: * शरीर को शुद्ध करता है * त्वचा रोगों में लाभ * संक्रमण से बचाव
13. गोंद शलकी गुण/लाभ: * कब्जोरी दूर करता है * प्रयोग विधि: काढ़ा या चूर्ण बनाकर सेवन
14. गोंद हींग गुण/लाभ: * सूजन कम करता है * प्रयोग विधि: दूध के साथ सेवन करें
15. गोंद अर्जुन गुण/लाभ: * हृदय के लिए लाभकारी * रक्तवायु संतुलित करता है
16. गोंद देत गुण/लाभ: * रक्तवायु संतुलित करता है * प्रयोग विधि: काढ़ा बनाकर सेवन करें
17. गोंद झन्ती गुण/लाभ: * सूजन कम करता है * प्रयोग विधि: चूर्ण या कुत्ला करें
18. गोंद देत गुण/लाभ: * सूजन कम करता है * प्रयोग विधि: चूर्ण या कुत्ला करें
19. गोंद झन्ती गुण/लाभ: * सूजन कम करता है * प्रयोग विधि: चूर्ण या कुत्ला करें
20. गोंद झन्ती गुण/लाभ: * सूजन कम करता है * प्रयोग विधि: चूर्ण या कुत्ला करें

बढ़ा हुआ कोलेस्ट्रॉल (Cholesterol) कम करने का देसी घरेलू फार्मूला

पिकी कुंडू

1. लहसुन - 100 ग्राम
 2. मेथी दाना - 100 ग्राम
 3. अलसी (फ्लैक्ससीड) - 100 ग्राम
 4. अर्जुन की छाल - 50 ग्राम
 5. आंवला सूखा - 100 ग्राम
 6. हल्दी - 50 ग्राम
- बनाने की विधि सभी सामग्री को साफ करके 1 दिन धूप में सुखा लें, फिर सभी चीजों को अलग - अलग हल्का भून लें (बिना जलाए), अब सबको मिलाकर बारीक पाउडर बना लें
- * तैयार पाउडर को कांच के जार में सुरक्षित रखें
- सेवन / उपयोग विधि
- * सुबह खाली पेट 1 चम्मच पाउडर गुनगुने पानी के साथ
- * रात को भोजन के बाद 1 चम्मच गुनगुने पानी के साथ
- * नियमित सेवन करें
- संभावित लाभ
1. बढ़ा हुआ कोलेस्ट्रॉल कम करने में सहायक



2. हार्ट ब्लॉक के खतरा को कम करने में मदद
3. रक्त संचार बेहतर करता है
4. शरीर की चर्बी घटाने में सहायक

आवश्यक सूचना

* यह घरेलू रेमेडी सहायक उपाय है

* हृदय रोगी डॉक्टर की सलाह से ही सेवन करें

* एलोपैथिक दवा बिना पुछे बंद न करें

* बीपी और शुगर वाले सावधानी रखें

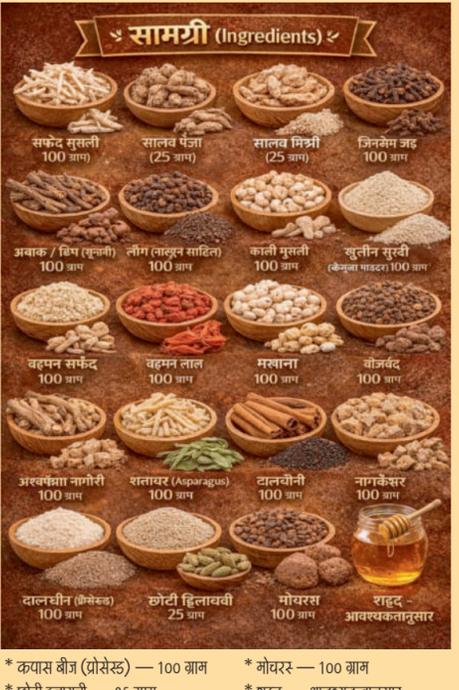
* नियमित जांच जरूरी है

* सभी सुखी और निरोगी रहे।

अमर शक्ति + टाइमिंग

पिकी कुंडू

- सिफाई फ़ॉर्मूला, सामग्री (Content)
- * सफ़ेद मूसली - 100 ग्राम
 - * सालब पंजा - 25 ग्राम/सालब मिश्री
 - * (Egyptian) - 25 ग्राम
 - * त्रिपलिंग जड़ - 100 ग्राम
 - * अक्रकंठा - 100 ग्राम
 - * अबाक / टिप (यूनानी) - 100 ग्राम
 - * लौंग (नायूरुन सॉरिंट) - 100 ग्राम
 - * काली मूसली - 100 ग्राम
 - * खुर्लीन सूखी (कैचूआ पाउडर) - 100 ग्राम
 - * बरमन सफ़ेद - 100 ग्राम
 - * बरमन लाल - 100 ग्राम
 - * मरदावा - 100 ग्राम
 - * बीजबंद - 100 ग्राम
 - * जायित्री - 100 ग्राम
 - * अश्वगंधा नागोरी - 100 ग्राम
 - * शतावर (Asparagus) - 100 ग्राम
 - * दालचीनी - 100 ग्राम
 - * कलौंजी - 100 ग्राम
 - * नागकेसर - 100 ग्राम
 - * शकलकूट मिश्री - 100 ग्राम
 - * तुदरी सफ़ेद - 100 ग्राम
 - * ससबगोल की भूसी - 100 ग्राम



- * कपास बीज (प्रोसेस) - 100 ग्राम
- * छोटी इलायची - 25 ग्राम
- * गोवर - 100 ग्राम
- * शरद - श्रावश्यकता अनुसार

सफुफ तौलिद (यौवन हेतु)

पिकी कुंडू

- उत्तम स्वास्थ्य व शक्ति के लिए
- सामग्री (Content)
1. सफ़ेद मूसली - 50 ग्राम
 2. मखाना - 50 ग्राम
 3. लाजवंती (छई-मुई बूटी) - 50 ग्राम
 4. बबूल गोंद (Acacia Gum) - 25 ग्राम
 5. सिंघाड़ा - 50 ग्राम
 6. समुद्री शोष / बुर्गुंड बीज - 30 ग्राम
 7. काली मूसली - 50 ग्राम
 8. बीज ऑफ (शुक्राणु वर्धक जड़ी-बूटी) - 30 ग्राम
 9. ऊंटकटारा बीज - 50 ग्राम

10. पहाड़ी इमली मगज - 50 ग्राम
11. मस्तगी (Mastic Gum) - 50 ग्राम
12. छोटी इलायची - 10 ग्राम
13. कफिकच्छू बीज (शुद्ध प्रक्रिया किए हुए) - 40 ग्राम
14. गोखरू पाउडर - 50 ग्राम
15. कुच्चा मिश्री - 300 ग्राम



बनाने की विधि (Preparation)

सभी सामग्रियों को अच्छी तरह साफ करके बारीक पीस लें। फिर सबको मिलाकर किसी एयरटाइट डिब्बे या कांच की बोतल में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि (Recipe of Intake)

सुबह खाली पेट 1 चम्मच दूध के साथ लें।

डिमेंशिया का जोखिम घटाने वाले प्रमुख सप्लीमेंट/ पोषक तत्व

1. विटामिन D3 (सबसे मजबूत प्रमाण) नियमित विटामिन D लेने वालों में डिमेंशिया का जोखिम 40% कम पाया गया।
 - * दिमाग की सूजन कम करता है, * न्यूरोन्स की रक्षा करता है, और * अमाइलॉइड प्लैक की सफ़ाई में मदद करता है।
 - * कमी होने पर जोखिम काफी बढ़ जाता है।
 - * दिमाग की कोशिकाओं में नए माइटोकॉन्ड्रिया (ऊर्जा पैकट) बनाने में मदद।
 - * ऊर्जा उत्पादन बढ़ाकर स्मृति व फोकस को सहाय।
- Bacopa Monnieri (ब्राह्मी) - 50% Bacosides
- * न्यूरोप्लास्टिसिटी बढ़ाता है (नई नव कनेक्शन)।
- * याददाश्त, सोखने की क्षमता में सुधार।
- * Alpha-GPC (Choline स्रोत)
- * Acetylcholine बढ़ाकर स्मृति व ध्यान में मदद।



- * उम्र से जुड़ी कॉग्निटिव गिरावट धीमी।
- * Vitamin B6
- * Homocysteine घटाकर नव डैमेज से सुरक्षा।
- * उच्च होमोसिस्टिन = अधिक डिमेंशिया जोखिम।
- लाइफस्टाइल जो प्रभाव को बढ़ाते हैं
- * नियमित व्यायाम: हिप्पोकैम्पस वॉल्यूम बढ़ाता है (याददाश्त केंद्र)।
- * गहरी नींद: दिमाग से टॉक्सिक प्रोटीन्स की सफ़ाई।
- * MIND डाइट: हरी पत्तेदार सब्जियाँ, बेरीज, नट्स, मछली - जोखिम में उल्लेखनीय कमी।
- * सामाजिक सक्रियता: कॉग्निटिव रिजर्व बढ़ाती है।
- महत्वपूर्ण: ये इलाज नहीं हैं, रोकथाम/जोखिम घटाने में सहायक हैं। दवाओं/बीमारियों में डॉक्टर से सलाह जरूरी।

धर्म अध्यात्म



साक्षी गोपाल: जब भगवान गवाही देने पैदल चल पड़े!



पिकी कुंडू

बहुत समय पहले की बात है, जब रेलगाड़ियों या वाहन नहीं हुआ करते थे। तीर्थयात्रा का अर्थ था— मीलों पैदल चलना, जंगलों को पार करना और कठिनाइयों को सहना। उड़ीसा (तत्कालीन उत्कल) के एक छोटे से गाँव से दो ब्राह्मण तीर्थयात्रा के लिए निकले। एक अत्यंत वृद्ध और धनवान थे, दूसरे नवयुवक और निर्धन। वृद्ध ब्राह्मण के लिए यह यात्रा बहुत कठिन थी। पग-पग पर उन्हें सहारे की आवश्यकता थी। उस नवयुवक ब्राह्मण ने पूरे रास्ते उस वृद्ध की सेवा एक आज्ञाकारी पुत्र की भाँति की। वह उनका सामान उठाता, उनके पैर दबाता और उनके भोजन की व्यवस्था करता। महीनों की यात्रा के बाद वे श्रीधाम वृन्दावन पहुँचे। गोपाल जी (श्री कृष्ण) के भव्य मंदिर में दर्शन करते समय वृद्ध ब्राह्मण का हृदय कृतज्ञता से भर गया। उन्होंने नवयुवक का हाथ पकड़कर कहा, 'रबेदा! तुमने मेरी जो सेवा की है,

वह मेरा सगा पुत्र भी नहीं कर सकता था। मैं तुम्हारे ऋण से मुक्त होना चाहता हूँ। मैं गोपाल जी को साक्षी मानकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपनी छोटी बेटी का विवाह तुमसे करूँगा। नवयुवक यह सुनकर सन्न रह गया। उसने विनम्रता से कहा, 'बाबा, आप कुलीन और धनवान हैं, मैं एक दरिद्र ब्राह्मण हूँ। यह मेले आपके समाज और परिवार को स्वीकार नहीं होगा। कृपया भावना में बहकर ऐसी प्रतिज्ञा न करें।'

किंतु वृद्ध ने हठपूर्वक कहा, 'मैं जो कहता हूँ, वह करता हूँ। यह गोपाल जी का दरबार है, यहाँ किया गया वादा कभी झूठा नहीं हो सकता।'

तीर्थयात्रा समाप्त कर जब वे अपने गाँव लौटे, तो वृद्ध ने अपने परिवार को अपनी प्रतिज्ञा के बारे में बताया। यह सुनते ही घर में भूचाल आ गया। बड़े बेटे ने क्रोध में कहा, 'पिताजी! क्या आपकी मति मारी गई है? उस भिखारी से मेरी बहन का विवाह? असंभव!'

वृद्ध की पत्नी ने धमकी दे दी, 'अगर यह अनर्थ हुआ, तो मैं विष खाकर जान दे दूँगी।' बेचारा वृद्ध धर्मसंकट में फँस गया। एक तरफ भगवान के सामने की गई प्रतिज्ञा थी, दूसरी तरफ परिवार का विरोध। अंततः मोह जीत गया और वे चुप साध गए।



जब कई दिन बीत गए और विवाह की कोई चर्चा नहीं हुई, तो वह नवयुवक ब्राह्मण वृद्ध के घर पहुँचा। उसने हाथ जोड़कर कहा, 'बाबा, आपने गोपाल जी

के सामने वचन दिया था। अब आप पीछे क्यों हट रहे हैं?' इससे पहले कि वृद्ध कुछ बोलते, उनका बड़ा बेटा बाहर आया और

चिल्लाने लगा, 'अरे धूर्त! तूने तीर्थयात्रा में मेरे बड़े पिता को नशा खिलाकर या बहला-फुसलाकर उनका धन टगलिया और अब झूठी कहानियाँ गढ़ रहा है? निकल जा यहाँ से!'

शोर सुनकर गाँव वाले इकट्ठे हो गए। नवयुवक ने पंचायत के सामने अपनी बात रखी कि वृद्ध ने गोपाल जी को साक्षी माना था। इस पर बड़े बेटे ने उपहास करते हुए एक शर्त रखी—वह जानता था कि यह असंभव है। उसने कहा, 'तुम कहते हो कि भगवान साक्षी थे? ठीक है। यदि तुम्हारे वो गोपाल जी यहाँ आकर गवाही दे दें कि मेरे पिता ने वचन दिया था, तो मैं अपनी बहन का विवाह तुमसे कर दूँगा।'

गाँव वाले हँसने लगे, लेकिन नवयुवक का चेहरा विश्वास से दमक रहा था। उसने कहा, 'मुझे स्वीकार है। मैं अपने साक्षी को बुलाने जा रहा हूँ।' नवयुवक वापस पैदल वृन्दावन पहुँचा। मंदिर में जाकर वह फूट-फूट कर रोने लगा। उसने कहा, 'रभृशु! मुझे पत्नी का मोह नहीं है, लेकिन आपके सामने बोले गए वचन को यह दुनिया झूठ मान रही है। मेरे सत्य की नहीं, आपकी साख की रक्षा का प्रश्न है। आपको चलना होगा।'

उसकी करुण पुकार सुनकर, पत्थर की मूर्ति से आवाज आई, 'अरे पागल! कहीं पत्थर की मूर्तियाँ भी चला करती हैं?'

नवयुवक ने तपाक से उत्तर दिया, 'प्रभु! यदि पत्थर की मूर्ति बोल सकती है, तो वह चल भी सकती है। आपको मेरे साथ चलना ही होगा।'

भक्त के हठ के आगे भगवान हार गए। गोपाल जी ने कहा, 'ठीक है, मैं चलूँगा। लेकिन मेरी एक शर्त है। मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आऊँगा। मेरे पैरों के नूपुरों (घुंघरुओं) की रुनझून से तुम्हें पता चलेगा कि मैं साथ हूँ। लेकिन याद रखना, तुमने जहाँ भी पीछे मुड़कर देखा, मैं वहीं स्थिर हो जाऊँगा और आगे नहीं बढ़ूँगा।'

यात्रा शुरू हुई। आगे-आगे भक्त, पीछे-पीछे भगवान। मीलों तक नूपुरों की छम-छम ध्वनि भक्त को आश्चर्यस्त करती रही कि उसके ठाकुर आ रहे हैं।

दिन बीते, रातें बीतीं। वे उड़ीसा की सीमा में प्रवेश कर गए। गाँव (कटक) के पास विद्यानगर (अब पास ही था। रास्ते में एक रेतिला मैदान आया। रेत में चलने के कारण भगवान के पैरों के घुंघरुओं की आवाज दब गई। नवयुवक को अचानक सन्नाटा महसूस हुआ। उसके मन में शंका ने जन्म ले लिया—'क्या प्रभु रुक गए? क्या वे वापस चले गए?'

गाँव की सीमा पर पहुँचकर, व्याकुलता में वह अपनी शर्त भूल गया और उसने झट से पीछे मुड़कर देख लिया।

वहाँ साक्षात् गोपाल जी खड़े थे, मंद-मंद मुस्कुराते हुए। लेकिन जैसे ही भक्त

ने देखा, वे वहीं स्थिर हो गए। भगवान बोले, 'रवत्स! मैंने कहा था कि पीछे मत देखना। अब मैं यहाँ से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाऊँगा।'

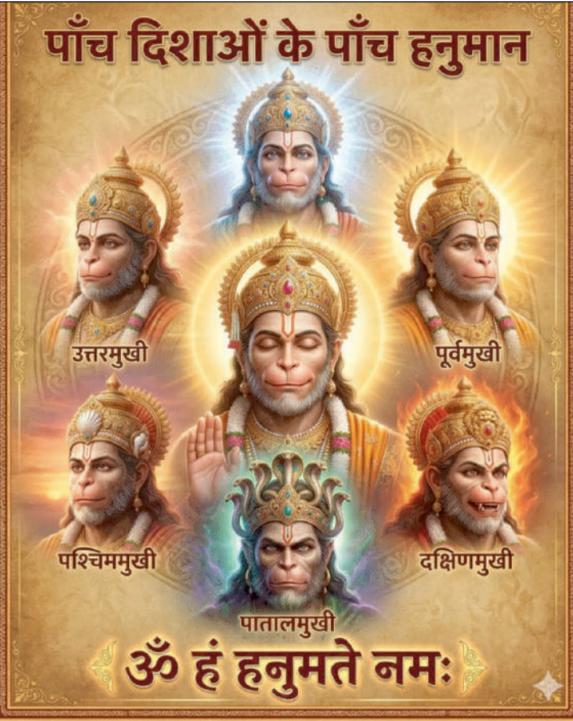
नवयुवक भागा-भागा गाँव गया और सबको बुला लाया। गाँव वाले, वह वृद्ध ब्राह्मण और उसका धर्मडी बेटा—सब दौड़कर आए। उन्होंने देखा कि वृन्दावन के वही गोपाल जी, जो कभी नहीं हिलते, आज उनके गाँव के बाहर खड़े हैं। यह चमत्कार देखकर बड़े बेटे का अभिमान चूर-चूर हो गया। उसने भक्त के चरणों में गिरकर क्षमा माँगी।

भगवान की गवाही साक्षात् थी। प्रतिज्ञा पूरी की गई और धूमधाम से उस कन्या का विवाह नवयुवक भक्त से हुआ।

जिस स्थान पर भगवान रुके थे, वहाँ एक भव्य मंदिर बनाया गया। आज भी उड़ीसा (पुरी के निकट) में वह मंदिर 'साक्षी गोपाल' के नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ भगवान की वही मूर्ति विराजमान है जो अपने भक्त के विश्वास को बचाने के लिए सैकड़ों मील पैदल चलकर आई थी।

यह कथा सिद्ध करती है कि ईश्वर केवल मंदिरों में कैद नहीं है। यदि भक्त प्रह्लाद जैसा हो तो खोंबे से निकल आते हैं, और यदि इस ब्राह्मण जैसा हो, तो गवाही देने के लिए पैदल भी चल पड़ते हैं। अंतर केवल हमारे विश्वास की गहराई का है।

पाँच दिशाओं के पाँच हनुमान



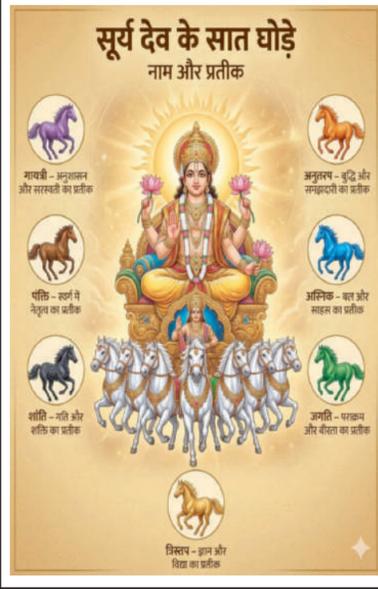
पिकी कुंडू

'पाँच दिशाओं के पाँच हनुमान' दिव्य अवधारणा को दर्शाता है। हिंदू परंपरा में भगवान हनुमान को केवल एक स्वरूप में नहीं, बल्कि पाँच दिशाओं में रक्षा करने वाले पंचमुखी स्वरूप के रूप में भी पूजा जाता है।

पाँच दिशाओं के पाँच हनुमान

1. पूर्वमुखी हनुमान यह स्वरूप पूर्व दिशा की रक्षा करता है और जीवन में नई ऊर्जा, साहस और सफलता प्रदान करता है।
2. उत्तरमुखी हनुमान उत्तर दिशा के रक्षक माने जाते हैं। यह स्वरूप धन, समृद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक है।
3. पश्चिममुखी हनुमान पश्चिम दिशा में आने वाले नकारात्मक प्रभावों और बाधाओं से सुरक्षा

4. दक्षिणमुखी हनुमान दक्षिण दिशा को यम दिशा भी कहा जाता है। यह स्वरूप मृत्यु भय, संकट और शत्रुओं से रक्षा करता है।
 5. पातालमुखी हनुमान यह स्वरूप पाताल लोक और गुप्त नकारात्मक शक्तियों से रक्षा करता है। महत्व 'पाँच दिशाओं के पाँच हनुमान' का अर्थ है कि भगवान हनुमान हर दिशा से भक्तों की रक्षा करते हैं। इसलिए इनकी पूजा करने से भय, संकट, नकारात्मकता और बाधाओं से मुक्ति मिलती है।
- मंत्र:**
ॐ हं हनुमते नमः
हनुमान जी की शक्ति, साहस और सुरक्षा का अत्यंत प्रभावशाली मंत्र माना जाता है।



सूर्य देव के सात घोड़े नाम और प्रतीक

सूर्य देव के सात घोड़े नाम और प्रतीक

पिकी कुंडू

1. गायत्री - अनुशासन और सरस्वती का प्रतीक
2. अनुतरप - बुद्धि और समझदारी का प्रतीक
3. पंक्ति - स्वर्ग में नेतृत्व का प्रतीक
4. अस्निक - बल और साहस का प्रतीक
5. शान्ति - गति और शक्ति का प्रतीक
6. जगति - पराक्रम और बीरता का प्रतीक
7. विस्तप - ज्ञान और विद्या का प्रतीक

कामसूत्र के अनुसार नायक और नायिका की जोड़ी उनके स्वभाव

पिकी कुंडू

* जिसमें अनुकूल (पत्नीनिष्ठ) नायक के साथ स्वकीया (विवाहित पतिव्रता) * दक्षिण (सभी से प्रेम करने वाला) नायक के साथ परकीया (विवाहित परपुरुष से प्रेम करने वाली) नायिका की जोड़ी बनती है। * शश (हिरण-सा) नायक का मृगी (हिरणी-सी) नायिका का वृष (बैल-सा) का वड़वा (गाय-सी) से और अश्व (घोड़ा-सा) का हस्तिनी (हाथिनी-सी) नायिका से मेल होता है जो शारीरिक व मानसिक अनुकूलता पर आधारित है * नायिकाओं के प्रकार (मुख्य)

स्वकीया (अपनी): पतिव्रता शीलवान लज्जाशील * परकीया (पराई) विवाहित होते हुए भी किसी और से प्रेम करने वाली * सामान्य (साधारण) स्वतंत्र किसी भी पुरुष के प्रति आकर्षित होने वाली **नायकों के प्रकार (मुख्य)** अनुकूल _ जो अपनी विवाहित पत्नी के अलावा किसी और के बारे में नहीं सोचता दक्षिण _ जो अपनी पत्नी और अन्य स्त्रियों से समान प्रेम रखता है (मध्यम नायक) **शट _ जो धोखेबाज होता है..** जोड़ियों के उदाहरण (शारीरिक

अनुकूलता) 1. शश नायक (हिरण जैसा): मृगी नायिका (हिरणी जैसी) 2. वृष नायक (बैल जैसा) वड़वा नायिका (गाय जैसी) 3. अश्व नायक (घोड़ा जैसा) _ हस्तिनी नायिका (हाथिनी जैसी) संक्षेप में कामसूत्र नायक - नायिका के व्यक्तिगत गुणों उनके सामाजिक दर्जे और शारीरिक बनावट के आधार पर विभिन्न प्रकार के मिलनों का वर्णन करता है जिसमें अनुकूलता (सामंजस्य) सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है चाहे वह नैतिक स्वकीया - अनुकूल हो या शारीरिक शश-मृगी हो।



शास्त्रों में कन्यादान को गोदान, भूमिदान से भी श्रेष्ठ कहा गया है इससे पितृऋण और ऋषिऋण से मुक्ति का मार्ग बनता है।

कन्या को संस्कार और सम्मान के साथ विदा करना — ईश्वर सेवा के समान है। यह पुण्य सात पीढ़ियों तक फल देता है। जिन परिवारों में पितृदोष या बार-बार बाधाएँ आती हैं, वहाँ कन्यादान से पूर्वज प्रसन्न होते हैं और आशीर्वाद मिलता है। त्याग और करुणा का संस्कार कन्यादान माता-पिता के अहंकार को गलाकर उन्हें करुणा और वैराग्य की ओर ले जाता है। ईश्वर के निकटता का अनुभव विवाह में कन्या को लक्ष्मी स्वरूप और वर को नारायण स्वरूप मानकर दान किया जाता है।

यह सीधे भगवत्स्मरण का काम बन जाता है। सामूहिक विवाह में भाग लेने के सहस्र गुना पुण्य जहाँ एक साथ कई कन्याओं का विवाह होता है, वहाँ एक नहीं, अनेक कन्यादानों का फल मिलता है। सामूहिक विवाह एक निष्काम सेवा का श्रेष्ठ उदाहरण बिना नाम - यश, बिना दिखावे के सेवा — यही सच्ची भक्ति (निष्काम कर्मयोग) है। समाज कल्याण से आत्मशुद्धि होती है और निर्धन, असहाय परिवारों की सहायता से चित्त शुद्ध होता है और कर्मों का बोझ हल्का होता है। सामूहिक विवाह में 'मेरा - तेरा'

भाव टूटता है जिससे अहंकार गलता है और विनम्रता आती है। गृहस्थ आश्रम का मूल उद्देश्य है — दान, सेवा और धर्म की वृद्धि सामूहिक विवाह इसमें सीधा योगदान देता है। **संतों का सार वचन :-** जिस घर से कन्या सम्मान सहित विदा होती है, उस घर में देवता स्वयं निवास करते हैं। **संक्षेप में** कन्यादान → व्यक्तिगत व पारिवारिक मोक्ष मार्ग सामूहिक विवाह → समाजिक सेवा + अनेक गुना पुण्य दोनों मिलकर → जीवन का श्रेष्ठ संस्कार



महादेव की गौ भक्ति

एक बार भगवान-शिव अत्यंत मनोहारी स्वरूप धारण करके भ्रमण कर रहे थे। यद्यपि दिग्बर वेश है, शरीर पर भस्म रमाये है सुंदर जटाएँ हैं परंतु ऐसा सुंदर भगवान का रूप करोड़ों कामदेवों को लज्जित कर रहा है। ऋषि यज्ञ कर रहे थे और शंकर जी वहा से अपनी मस्ती में रामनाम अमृत का पान करते करते जा रहे थे।

भगवान-शिव के अद्भुत रूप पर मोहित होकर ऋषि पत्नियाँ उनके पीछे पीछे चली गयीं। ऋषियों को समझ नहीं आया कि यह हमारे धर्म का लोप करने वाला अवधुत कौन है जिसके पीछे हमारी पत्नियाँ चली गयीं। पत्नियाँ नहीं रहेंगी तो हमारे यज्ञ कैसे पूर्ण होंगे? ऋषियों ने ध्यान लगाया तो पता लगा यह तो साक्षात् भगवान-शिव हैं। ऋषियों को क्रोध आ गया, ऋषियों ने श्राप दे दिया और श्राप से भगवान-शिव के शरीर में दाह (जलन) उत्पन्न हो गया। शंकर जी वहाँ से अंतर्धान हो गए हिमालय की बर्फ में चले गए, क्षीरसागर में गए, चन्द्रमा एवं



गंगा जी के पास भी गए परंतु दाह शांत नहीं हुआ। भगवान-शिव अपने आराध्य गोलोकविहारी श्रीकृष्ण के पास गए, उन्होंने गौ माता की शरण जाने को कहा। अतः भगवान-शिव गोलोक में श्री सुरभि गाय का स्तवन करने लगे। उन्होंने कहा, सृष्टि, स्थिति और विनाश करने वाली हे मां तुम्हें बार बार नमस्कार है। तुम रसमय भावों से समस्त पृथ्वीतल, देवता और पितरों को तुप्त करती हो। सब प्रकार के रसतत्वों के मर्मज्ञो ने बहुत विचार करने पर यही निर्णय किया कि मधुर रस का आस्वादन प्रदान करने वाली एकमात्र तुम्ही हो। सम्पूर्ण चराचर विश्व

को तुम्ही ने बल और स्नेह का दान दिया है। हे देवि! तुम रुद्रों की मां, वसुओं की पुत्री, आदित्यों की स्वसा हो और संतुष्ट होकर वाञ्छित सिद्धि प्रदान करनेवाली हो। तुम्ही धृति, तुष्टि, स्वाहा, स्वधा, ऋद्धि, सिद्धि, लक्ष्मी, धृति (धारणा), कीर्ति, मति, कान्ति, लज्जा, महामाया, श्रद्धा और सर्वार्थसाधिनी हो। तुम्हारे अतिरिक्त त्रिभुवन में कुछ भी नहीं है। तुम अग्नि और देवताओं को तुप्त करने वाली हो और इस स्थावर जंगम-सम्पूर्ण जगत्में व्याप्त हो। देवि! तुम सर्वदेवमयी, सर्वभूत समृद्धि

दायिनी और सर्वलोक हितैषिणी हो, अतएव मेरे शरीर का भी हित करो। अनघे! मैं प्रणत होकर तुम्हारी पूजा करता हूँ। तुम विश्व दुःखहारिणी हो, मेरे प्रति प्रसन्न हो। हे अमृतसम्भवे! ब्राह्मणों के शापानल से मेरा शरीर दग्ध हुआ जा रहा है, तुम उसे शीतल करो। गौ माता ने कहा, मेरे भीतर प्रवेश करो तुम्हें कोई ताप नहीं तपा पायेगा भगवान-शिव ने सुरभि माता की प्रदक्षिणा की और जैसे ही गाय ने 'ॐ मां' उच्चारण किया शिव जी गौ माता के पेट में चले गए। शिव जी को परम आनंद प्राप्त हुआ।

डीसी ने किया प्रारंभ और केंद्रीय विद्यालय झज्जर का दौरा शिक्षा की गुणवत्ता, आधारभूत सुविधाओं व अकादमिक गतिविधियों का लिया विस्तृत जायजा

प्रारंभ स्कूल की बिल्डिंग की रिपेयर एस्टीमेट तैयार करने के लिए निर्माण विभाग को दिए निर्देश

झज्जर, 27 जनवरी। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन टीचर एजुकेशन, झज्जर का दौरा कर संस्थान में उपलब्ध शैक्षणिक गतिविधियों, आधारभूत ढांचा तथा प्रशासनिक व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। इस दौरान डीसी ने संस्थान में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों, कक्षाओं, पुस्तकालय, आईसीटी लैब, छात्रावास एवं अन्य सुविधाओं का बारीकी से अवलोकन किया। डीसी ने अधिकारियों व संस्थान प्रबंधन से संवाद करते हुए कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण भविष्य की शिक्षा व्यवस्था की मजबूत नींव है।

डीसी ने कहा कि शिक्षक प्रशिक्षणों को आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, तकनीकी दक्षता एवं नवाचार आधारित शिक्षा से जोड़ना समय की आवश्यकता है। निरीक्षण के दौरान डीसी ने शैक्षणिक संसाधनों के प्रभावी उपयोग, साफ-सफाई, अनुशासन तथा विद्यार्थियों की सुविधाओं को और बेहतर बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने संस्थान में शैक्षणिक वातावरण को और अधिक



सुदृढ़ करने के लिए आवश्यक सुधारतात्मक कदम उठाने पर भी बल दिया।

डीसी ने कहा कि शिक्षण संस्थान का माहौल स्वच्छ और सुंदर होना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि भवन के रिपेयर की जरूरत है। मौके पर ही लोक निर्माण विभाग के

कार्यकारी अभियंता सुमित कुमार को रिपेयर एस्टीमेट तैयार के निर्देश डीसी ने दिए। डीसी ने इस उपरगत केंद्रीय विद्यालय झज्जर का दौरा करते हुए स्कूल की शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता पर फोकस करें।



छात्रों को तनाव रहित परीक्षा के लिए तैयार करें। परीक्षा से पहले छात्रों की कक्षा में परीक्षा का अभ्यास करवाएं ताकि छात्रों पर परीक्षा का अनावश्यक दबाव न बनें। उन्होंने कहा कि शिक्षा के साथ छात्रों के मानसिक और शारीरिक विकास के लिए खेल जैसी गतिविधियां निरंतर

होते रहनी चाहिए। केंद्रीय स्कूल प्रबंधन को भी स्कूल की रिपेयर के लिए एस्टीमेट तैयार कराने के निर्देश दिए। इस अवसर लोक निर्माण विभाग के कार्यकारी अभियंता सुमित कुमार सहित संस्थान के अधिकारी, शिक्षकगण एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

एसडीएम ने किया विभागीय अधिकारियों के साथ अंबेडकर स्टेडियम का दौरा

अंबेडकर स्टेडियम से अवैध अतिक्रमण हटवाया गया- बोले एसडीएम उपमंडल में सरकारी जमीन पर अतिक्रमण करने वालों पर कार्रवाई जारी रहेगी -- बोले एसडीएम



परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़, 27 जनवरी। एसडीएम अभिनव सिवाच (आईएस) के नेतृत्व में बादली रोड स्थित डॉ. भीमराव अंबेडकर स्टेडियम में खेलों के लिए चिन्हित सरकारी भूमि पर किए गए अवैध अतिक्रमण को प्रशासन द्वारा हटाया गया। यह कार्रवाई पूर्व में जारी किए गए नोटिसों के क्रम में अमल में लाई गई। एसडीएम अभिनव सिवाच ने जानकारी देते हुए बताया कि स्टेडियम की भूमि पर अवैध रूप से कब्जा कर निर्माण किया गया था। अतिक्रमणकारियों को नियमानुसार पहले ही नोटिस जारी किए जा चुके थे। ड्यूटी मजिस्ट्रेट की नियुक्ति कर

पुलिस बल को मौजूदगी में सभी अवैध निर्माणों को हटाया गया। कार्रवाई के दौरान मौके पर मौजूद जिला खेल अधिकारी को एसडीएम ने निर्देश दिए कि अतिक्रमण मुक्त कराई गई भूमि पर मिट्टी डलवाकर समतलीकरण किया जाए, ताकि यहां खेल गतिविधियों के लिए आवश्यक सुविधाएं विकसित की जा सकें। एसडीएम अभिनव सिवाच ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि सरकारी भूमि पर किसी भी प्रकार का अतिक्रमण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। भविष्य में भी यदि कोई व्यक्ति सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करता पाया गया तो उसके विरुद्ध नियमानुसार सख्त

कार्रवाई जारी रहेगी। एसडीएम ने मौके पर मौजूद जिला खेल अधिकारी सतेंद्र नांदल को निर्देश देते हुए कहा कि स्टेडियम में आज अतिक्रमण से मुक्त हुई जमीन पर खेल सुविधाएं शुरू करें। उन्होंने कहा कि डीसी साहब के दिशा निर्देश में खेल स्टेडियम में सुधार के लिए योजनाबद्ध तरीके से काम शुरू किया जा रहा है। लोकनिर्माण विभाग को एस्टीमेट बनाने के आदेश दिए जा चुके हैं। इस कार्य के लिए सीएसआर फंड और उद्यमियों से भी मदद ली जाएगी। प्रशासन का प्रयास है कि स्टेडियम में खिलाड़ियों को भी ढांचगत और मूलभूत सुविधाएं मिलें।

भक्तिमती पदमा बाई (बुआजी) के सप्तम पुण्य स्मृति महोत्सव के अंतर्गत हुआ सुंदरकाण्ड का संगीतमय सामूहिक पाठ

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन ऋषीकेश रोड स्थित यशोदानंदन धाम में श्रीराधाकृष्ण प्रेम संस्थान (रजि.) के द्वारा चल रहे निकुंजवासी भक्तिमती पदमा बाई (बुआजी) के अष्टदिवसीय सप्तम पुण्य स्मृति महोत्सव के अंतर्गत श्रीहनुमद् आराधन मंडल के द्वारा सुंदरकाण्ड का संगीतमय सामूहिक पाठ किया गया। श्रीहनुमानजी महाराज की विशेष आरती की गई।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रख्यात भागवतार्थी व भक्तिमती पदमा बाई (बुआजी) के परम-कृपापात्र आचार्य विपिन बापू महाराज ने कहा कि भक्तिमती

पदमा बाई (बुआजी) ब्रज निष्ठ, धाम निष्ठ व भगवद निष्ठ संत थीं। उन्होंने अपना समूचा जीवन इन्हीं की सेवा, पूजा व साधना में व्यतीत किया। महोत्सव में साध्वी माँ भावना रामानुजम माताजी ने कहा कि निकुंजवासी भक्तिमती पदमा बाई (बुआजी) अत्यंत सेवा भावी व भजनानंदी संत थीं। वे अपने परमाराध्य ठाकुर श्रीगोपालजी महाराज से नित्य लाड़-लड़ाया करती थीं। प्रख्यात साहित्यकार रघुवीर रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि भक्तिमती पदमा बाई (बुआजी) श्रीधाम वृन्दावन की बहुमूल्य विभूति थीं। उन जैसी दिव्यात्माओं से ही पृथ्वी पर धर्म व अध्यात्म का अस्तित्व है।

इस अवसर पर श्रीहनुमद् आराधन मंडल के अध्यक्ष पण्डित अशोक व्यास महाराज, भागवतार्थी सुमंत कृष्ण शास्त्री, आचार्य नेत्रपाल शास्त्री, धर्म पथिक शैलेन्द्र कृष्ण महाराज, पण्डित जगदीश चंद्र शास्त्री, सन्त प्रवर रामदास महाराज, आचार्य धर्मवीर शास्त्री, पंडित बुद्धिप्रकाश महाराज, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य भूति कृष्ण महाराज, आचार्य शिवांश भाई मिश्र, आचार्य अश्वनी कृष्ण महाराज, श्रीमती विमला देवी, देवकीनंदन अग्रवाल (मुम्बई), श्रीमती कृष्णा एवं डॉ. सनत कुमार शर्मा (रूपहडिया) आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।



निकुंजवासी बाबा गोपाल दास 'लघु सखी' महाराज की स्मृति में हुआ सैकड़ों कंबलों का वितरण



(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन प्रख्यात राधावल्लभयोगी संत निकुंजवासी बाबा गोपाल दास रलघु सखी महाराज की पावन स्मृति में उनके परिवारी जनों के द्वारा संस्थापित बाबा गोपाल दास चैरिटेबल सोसाइटी, भटिंडा (पंजाब) व आसरा वेलफेयर सोसाइटी, भटिंडा (पंजाब) के संयुक्त तत्वाधान में नगर के विभिन्न स्थानों पर अनेक सन्तों, निर्धनों व निराश्रितों को 100 से भी अधिक कंबल, लोई व

शॉल आदि का वितरण बाबा महाराज के विशेष कृपा पात्र व प्रमुख समाजसेवी रघुवीर रत्नर डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी, एडवोकेट के द्वारा किया गया। श्रीनाभापीठ सुदामा कुटी के अध्यक्ष श्रीमज्जगद्गुरु द्वारा आचार्य स्वामी सुतीक्ष्णदास देवाचार्य महाराज ने कहा कि निकुंजवासी बाबा गोपाल दास रलघु सखी महाराज अत्यंत भजनानंदी व परम-वीतराग, निस्पृह, सहज व सरल संत थे। उनकी स्मृति हिमालय की

चोटियों जैसी उज्ज्वल व धवल है। उनकी पावन स्मृति में उनके परिवारी जनों के द्वारा श्रीधाम वृन्दावन में समय-समय पर जो विभिन्न सेवा कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं, उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए वो कम है। क्योंकि नर सेवा नारायण सेवा से कम नहीं है। अखिल भारतीय निर्माही बड़ा अखाड़ा रासमण्डल के श्रीमहंत लाडली शरण देवाचार्य महाराज ने कहा कि निकुंजवासी बाबा गोपाल

दास रलघु सखी महाराज अत्यंत सेवाभावी संत थे। उन्होंने कभी भी किसी भी वस्तु का संग्रह नहीं किया। पशु-पक्षियों को भोजन आदि कराना, साधु-संतों और निर्धनों व निराश्रितों की हर संभव सेवा करना उनका प्रमुख व्यसन था। उन्होंने आजीवन फक्कड़ रूप से रहते हुए एवं भगवद् भक्ति व समाज सेवा करते हुए अपना जीवन व्यतीत किया। उन जैसे फक्कड़ संतों का तो अब युग ही समाप्त होता चला जा रहा है।

कन्याओं का पूजन व मां रेवा आरती समिति के सदस्यों का अभिनंदन किया



हरिहर चौहान

महेश्वर मध्य-प्रदेश में मां नर्मदा से जुड़े भक्तजनों व श्रद्धालुओं की इस प्राचीनतम नगरी महेश्वर से जुड़ाव बहुत अटूट है। जिसमें प्रतिवर्ष यहां मुंबई महाराष्ट्र से श्री गिरधर जाधव व जयंतिलाल सरवैया गुप और अहमदाबाद के गुप की अभिनव पहल पर महेश्वर में मां नर्मदा को प्रदूषणमुक्त करने हेतु दीप-दान नहीं किया गया और घाट पर ही विशाल महाआरती विशेष

दीपों द्वारा की गई। जिसमें मां रेवा आरती समिति महेश्वर का विशेष सहयोग रहा प्रकृत महोत्सव कार्यक्रम में इसलिए इन अतिथियों ने मां स्वरूपा छोटी छोटी कन्याओं का पूजन हल्दी कुमकुम लगा कर पूजा पूजन किया गया। जिसमें 150 से ज्यादा बच्चियों को विशेष उपहार भी दिये गये। कार्यक्रम में शामिल श्री गिरधर जाधव व भाई जयंतिलाल सरवैया और उनके साथियों ने मां रेवा आरती समिति महेश्वर के

दैनिक आरती पूजन जिसका लक्ष्य एक रुपए रोज से एक बच्चों नेक बनो की तर्ज पर सदस्यों व श्रद्धालुओं से सिक्रे एक रुपये लिया जाता है इस श्रद्धा शिल्प से आरती की प्रतिदिन घाट पर की जाती है समिति जो अपने रजत जयंती वर्ष यानी 25 वर्ष पूर्ण कर चुकी है। इस उपलक्ष्य पर मां रेवा आरती समिति महेश्वर के अध्यक्ष शिक्षाविद, लेखक, पंडित प्रदीप शर्मा व झा साहब बैंककर्मी और समिति के सदस्यगण में वरिष्ठ

शिक्षाविद पी के गुप्ता, वृजलाल सोनेट, रमेश केवट, लक्ष्मीनारायण स्वर्णकार, दिलीप शर्मा, रामकरण यादव व अन्य सदस्यों को विशेष स्मृति सम्मान और शाल फल देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मातृशक्ति बड़ी संख्या में शामिल थी। इस कार्यक्रम में आभार प्रदर्शन पंडित शर्मा द्वारा व्यक्त किया गया। यहां जानकारी मिडिया प्रभारी स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान ने प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

कथा कुंज की काव्य गोष्ठी में राष्ट्रभाव का गूंजता स्वर

डॉ. शंभु पवार

नई दिल्ली। गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था कथा कुंज साहित्य परिषद द्वारा आगामी पटल पर एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर देश-विदेश से जुड़े रचनाकारों ने अपनी सशक्त और भावपूर्ण रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रप्रेम, शोध, कर्तव्य और मानवीय संवेदनाओं को स्वर दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वर्ल्ड रिकॉर्ड लेखक, अंतर्राष्ट्रीय लेखक, वरिष्ठ पत्रकार-विचारक एवं धरा नवकर डॉ. शंभु पवार रहे। गोष्ठी का मनमोहक एवं प्रभावी संचालन परिषद के संस्थापक डॉ. गोविंद गुप्ता ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. शंभु पवार ने अपने उद्बोधन में कहा कि "गणतंत्र केवल एक शासन व्यवस्था नहीं, बल्कि नागरिकों के कर्तव्योत्साह और संकेतिक चेतना का अस्व है। साहित्य समाज की आत्मा होता है और ऐसी काव्य गोष्ठीय राष्ट्र के प्रति अविनाशिक आशा और सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करती है। आज की रचनाएँ यह प्रमाण हैं कि कविता आज भी राष्ट्रनिर्माण की सशक्त और कविता निरखे है।" उन्होंने युवा पीढ़ी से संकेतिक के नूतनों—स्वतंत्रता, समानता और कृत्य—को जीवन में आत्मसात करने का आग्रह किया। काव्य पाठ की शुरुआत देवराज से

जुड़ी कविधियां नागरी मद्र की ओरस्वी रचना "हिंद की सेना" से हुई— "सरस्वती पर तेनात वीर जवान ल्हाये, बोधे करुण सिर पर भारत माँ के लात ये ब्यारे।" उनकी कविताओं ने श्रोताओं के मन में वीर सैनिकों के प्रति गर्व और श्रद्धा का भाव भर दिया। कोलकाता की प्रसिद्ध कविधियां कविता कोठारी ने गणतंत्र के मर्म को रेखांकित करते हुए कहा— "अधिकार लें जो दाव रहे तो दाहिने भी व भूलें लम, अर्ध साकार करें उनके सपनों का भारत लम।" उनकी रचना ने कर्तव्य और उत्तरदायित्व की भावना को सशक्त स्वर दिया। वरिष्ठ साहित्यकार एवं कथा कुंज के संस्थापक डॉ. गोविंद गुप्ता ने गणतंत्र दिवस पर आभारित अपनी प्रभावशाली रचना प्रस्तुत की— "यह दिवस गणतंत्र का है, राष्ट्र के वंदन का है, यह दिवस गणतंत्र के केवल, बस कण केंद्रन का है।" रचना में राष्ट्रगौरव और आत्मिकव्यस को स्पष्ट जलक दिखाई दी। दुर्बल से सुप्रसिद्ध लेखिका एवं साहित्यकार निशा मिश्री ने वीर शहीदों को स्मरण करते हुए भावपूर्ण रचना प्रस्तुत की— "किन्तुने बलिदानों के बाद ये यड़ी है आई।" साथ ही उन्होंने नारी-सशक्तिकरण पर आभारित रचना



से विवेक प्रभाव छोड़ें— "अपना आशियाना, तू खुद ही बनाना, तेरी अपनी भी एक अक्रान्त पखवान है।" गणतंत्रवाद से कविधियों युवा श्रीवासव ने देशभक्ति से श्रोत-प्रोत् रचना में कहा— "बल ही नहीं सासक का परिवार भी देती रिबिदी नो सेना।" उनकी कविताओं ने सैन्य शक्ति के साथ-साथ

जीत होगी तेरी दमदार सत्य के पथ पर हो अग्रसर, बड़े जा तू कर्मों के रथ पर, अपने सपनों को दे विस्तार, हौसलों की बुलंद उड़ान भर।

निराशा को पूर्णतः नकार कर, आत्मविश्वास का कर संचार, परिश्रम की तीव्र हुंकार भर, लक्ष्य विजय श्री साकार कर।

ईश्वर को कर प्रतिदिन नमस्कार, रोम-रोम में शानंदर प्रवाह कर, साथ लेकर चल अपना परिवार, खुद में खुशियों का उत्साह भर।

अपनी प्रतिभा पर कर विचार, तुझमें बसा अनुपम कलाकार, कदमों को दे दिशा संग रफतार, तू है सक्षम सुंदर सृजनकार।

मीठी वाणी प्रेम की रसधार, गुणवान को पूजता है संसार, ज्ञान कौशल को बना आधार, फिर जीत होगी तेरी दमदार।
- मोनिका डगगा 'आनंद', चेन्नई,

सर्दी से स्वतंत्रता सेनानी और बुजुर्ग समेत कानपुर देहात में अब तक 34 की मौत

सुनील बाजपेई

कानपुर। लगातार जारी प्रचंड सर्दी का प्रकोपस्वांस के मरीजों, किसानों, बच्चों और बुजुर्गों के लिए जान घातक साबित हो रहा है, भीषण सर्दी के इस क्रम में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और एक बुजुर्ग की भी मौत हो गई। कुल मिलाकर सर्दी से कानपुर देहात में अब तक 34 लोगों की मौत हो चुकी है। पुलिस ने बताया कि स्वतंत्रता सेनानी का शव पोस्टमार्टम के लिए भी भेजा गया है। घटना के बारे में प्राप्त जानकारी के मुताबिक सीने में अचानक तेज दर्द से शिवली कोतवाली क्षेत्र के लालपुर शिवराजपुर में रहने वाले सेनानी पुत्र के अलावा रसूलाबाद थाना क्षेत्र के उसरी गंव में रहने वाले एक बुजुर्ग ने

दम तोड़ दिया। मौत की इन दोनों घटनाओं को मिलाकर कानपुर देहात जिले में सर्दी लगने व सीने में दर्द से मरने वालों की संख्या बढ़कर 34 हो गई है। पुलिस ने बताया कि रसूलाबाद थाना क्षेत्र के उसरी गंव के रहने वाले वेद प्रकाश गौतम के सीने में अचानक तेज दर्द होने से उनकी हालत बिगड़ गई। परिजन उनको गंभीर हालत में सीएससी रसूलाबाद ले गए। वहां मौजूद डॉक्टर ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। इस्पेक्टर रसूलाबाद सतीश कुमार सिंह ने बताया कि प्रार्थमिक छानबीन में हार्ट अटैक से घटना होने की बात सामने आई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद अग्रिम कार्रवाई होगी।

इसी तरह से शिवली कोतवाली क्षेत्र के लालपुर शिवराजपुर गंव में गांधी चबूतरे पर आयोजित गणतंत्र दिवस के मौके पर आयोजित सामारोह में अपने संबोधन के बाद स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पिता स्व. गोकुल प्रसाद चौरसिया की श्रद्धांजलि अर्पित करते समय उनके पुत्र रामसेवक चौरसिया अचानक गंभीर होकर निर गए। परिजन उनको गंभीर हालत में अस्पताल ले जाते समय रास्ते में उन्होंने दम तोड़ दिया। शव वापस आते ही उनके घर में कोहराम मच गया। मौके पर पहुंचे एसडीएम राज कुमार पांडेयव चौकी प्रभारी मैथ नरेंद्र सिंह ने उनको पुष्पांजलि दी। इसके बाद परिजनों ने विदूर में उनके शव का अंतिम संस्कार कर दिया।

भारत-यूरोपीय संघ महाडील:- बदलती विश्व व्यवस्था में भारत की रणनीतिक छलांग-मदर ऑफ ऑल डील और 21वीं सदी की नई वैश्विक आर्थिक- राजनीतिक धुरी-एक समग्र विश्लेषण

भारत-यूरोपीय संघ महाडील 21वीं सदी की बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत की रणनीतिक सोच,आर्थिक आत्मविश्वास और कूटनीतिक परिपक्वता का प्रमाण है - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तर पर भारत और यूरोपीय संघ के बीच संपन्न हुई ऐतिहासिक महाडील केवल एक व्यापारिक समझौता नहीं, बल्कि 21वीं सदी की वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और कूटनीति में उभरते भारत की निर्णायक भूमिका का प्रतीक बनकर सामने आई है। भारतीय पीएम द्वारा इसे मदर ऑफ ऑल डील कहा जाना अपने- आप में इस समझौते के व्यापक प्रभाव, दूरगामी निहितार्थ और रणनीतिक महत्व को रेखांकित करता है। मंगलवार, 27 जनवरी को आयोजित 16 वें भारत- यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन में जिस प्रकार मुक्त व्यापार समझौते पर वार्ता पूरी होने की औपचारिक घोषणा की गई और साथ ही सुरक्षा व रक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर हुए, उसने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत और यूरोपीय संघ केवल आर्थिक साझेदार नहीं, बल्कि रणनीतिक सहयोगी के रूप में आगे बढ़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं। एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता है कि यह शिखर सम्मेलन उस दौर में हुआ है जब विश्व व्यवस्था तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता रूस-यूक्रेन संघर्ष, पश्चिम एशिया में अस्थिरता आपूर्ति श्रृंखलाओं का पुनर्गठन और संरक्षणवाद की बढ़ती प्रवृत्तियाँ वैश्विक व्यापार और राजनीति को दिशा को प्रभावित कर रही हैं। ऐसे समय में भारत- ईयू महाडील एक संतुलनकारी शक्ति के रूप में उभरती दिखाई देती है, जो न केवल दोनों पक्षों के हितों को साधेगी, बल्कि वैश्विक दक्षिण और बहुपक्षीय व्यवस्था के लिए भी नई संभावनाएँ खोलेंगी। पीएम ने यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लयेन और यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंटीनोयो कोरसा की मेजबानी करते हुए जिस आत्मविश्वास के साथ यह घोषणा की कि भारत ने अपने इतिहास का सबसे बड़ा मुक्त व्यापार समझौता पूरा कर लिया है, वह भारत की आर्थिक कूटनीति में आए आत्मविश्वासपूर्ण परिवर्तन को दर्शाता है। अधिकारियों के अनुसार उच्चतम जांच के बाद लगभग छह महीनों में एफटीए पर औपचारिक

हस्ताक्षर हो जाएंगे और इसके अगले वर्ष प्रभाव में आने की संभावना है। यह समय- सीमा संकेत देती है कि दोनों पक्ष इसे केवल राजनीतिक घोषणा तक सीमित नहीं रखना चाहते, बल्कि शीघ्र क्रियान्वयन के लिए गंभीर हैं। यह एफटीए भारत और यूरोपीय संघ के बीच दशकों से चली आ रही बातचीत का परिणाम है। वर्षों तक मतभेद, जटिल नियम, पर्यावरणीय मानक, श्रम कानून और टैरिफ जैसे मुद्दे इस समझौते के मार्ग में बाधा बने रहे। किंतु बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य और भारत की बढ़ती आर्थिक क्षमता ने यूरोपीय को यह समझने पर मजबूर किया कि भारत को केवल एक उभरता बाजार नहीं, बल्कि एक दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदार के रूप में देखना आवश्यक है। भारत के लिए भी यह डील इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उसे उच्च-मूल्य वाले यूरोपीय बाजारों तक बेहतर पहुँच प्रदान करती है और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में उसकी भूमिका को मजबूत बनाती है।

साथियों बांटे कर हम इस महाडील का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष सुरक्षा और रक्षा सहयोग से जुड़ा है। इसको समझने की करें तो, दोनों पक्ष एक रक्षा ढांचा समझौते और एक रणनीतिक एजेंडे को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने के लिए तैयार हैं। यह संकेत देता है कि भारत और यूरोपीय संघ केवल व्यापार तक सीमित सहयोग नहीं चाहते बल्कि समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, आतंकवाद- रोधी प्रयासों और रक्षा प्रौद्योगिकी में भी मिलकर काम करने के इच्छुक हैं। यूरोपीय जिस तरह अमेरिका और चीन पर अपनी अत्यधिक निर्भरता कम करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, उसमें भारत एक स्वाभाविक और भरोसेमंद विकल्प के रूप में सटीकता से उभरता है।

साथियों बात अगर हम यूरोपीय संघ लंबे समय से स्ट्रेटिजिक ऑटोनॉमी की बात करता रहा है। इसको समझने की करें तो, यूक्रेन युद्ध के बाद यह आवश्यकता और भी तीव्र हो गई है, क्योंकि ऊर्जा, रक्षा और आपूर्ति श्रृंखलाओं में यूरोपीय को अपनी कमजोरियों का एहसास हुआ है। ऐसे में भारत जैसे लोकतांत्रिक, स्थिर और तेजी से बढ़ते देश के साथ रणनीतिक साझेदारी यूरोपीय के लिए न केवल आर्थिक बल्कि भू- राजनीतिक रूप से भी लाभकारी है। भारत के लिए यह साझेदारी इसलिए अहम है क्योंकि इससे उच्चतर रक्षा तकनीक, निवेश और वैश्विक मंच पर अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाने का अवसर मिलेगा।



साथियों बांटे कर हम भारतीय पीएम द्वारा महाडील के बाद कही गई छह प्रमुख बातों को समझने की करें तो वे इस समझौते की आत्मा को स्पष्ट करती हैं, पहली बात, यह एफटीए केवल एक व्यापारिक समझौता नहीं, बल्कि साझा समृद्धि का नया ब्लूप्रिंट है। यह कथन दर्शाता है कि भारत इस समझौते को शून्य-योग खेल के रूप में नहीं देखता, बल्कि इसे पारस्परिक लाभ और दीर्घकालिक विकास की नींव मानता है। भारत की आर्थिक कूटनीति अब विन-विन मॉडल पर आधारित है, जहाँ व्यापार को विकास और स्थिरता का साधन माना जाता है। दूसरी बात पीएम ने इसे भारत के इतिहास का सबसे बड़ा फ्री ट्रेड एग्रीमेंट बताया। यह केवल शब्दों का चयन नहीं, बल्कि इस डील के व्यापक दायरे का संकेत है। यूरोपीय संघ विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और इसके साथ मुक्त व्यापार समझौता भारत को वैश्विक व्यापार मानचित्र में एक नई ऊँचाई पर ले जाता है। यह समझौता न केवल वस्तुओं के व्यापार को बढ़ाएगा, बल्कि सेवाओं, निवेश और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी अवसर पैदा करेगा। तीसरी महत्वपूर्ण बात किसानों और छोटे उद्योगों से जुड़ी है। पीएम ने स्पष्ट किया कि यह एतिहासिक समझौता भारत के किसानों और लघु उद्योगों के लिए यूरोपीय बाजारों तक पहुँच को आसान बनाएगा। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत का कृषि और एमएसएमई क्षेत्र लंबे समय से वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धा की चुनौतियों से जूझ रहा है। यूरोपीय बाजार तक बेहतर पहुँच मिलेगी और भारतीय उत्पादों को उच्च मूल्य प्राप्त हो सकता है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था और रोजगार

सृजन को बल मिलेगा। चौथी बात नै-यूफैक्ट्रिंग और सर्विसेज सेक्टर से जुड़ी है। इस एफटीए से नै-यूफैक्ट्रिंग में नए अवसर पैदा होंगे और भारत के सेवा क्षेत्र, विशेषकर आईटी, स्वास्थ्य, शिक्षा और पेशेवर सेवाओं में यूरोपीय के साथ सहयोग और मजबूत होगा। एमके इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियानों को यह समझौता अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई ऊर्जा देगा। यूरोपीय निवेश और तकनीक के साथ भारतीय विनिर्माण वैश्विक मानकों पर खरा उतरने में सक्षम होगा। पाँचवीं बात भू-राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। पीएम ने कहा कि भारत और यूरोपीय संघ इंडो-पैसिफिक से लेकर कैरेबियन तक-त्रि-पक्षीय परियोजनाओं का विस्तार देंगे। यह बयान दर्शाता है कि दोनों पक्ष अब केवल द्विपक्षीय सहयोग तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि तीसरे देशों में भी संयुक्त परियोजनाओं के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। यह रणनीति वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए वैकल्पिक विकास मॉडल प्रस्तुत कर सकती है। छठी और अंतिम बात वैश्विक व्यवस्था से जुड़ी है। पीएम ने कहा कि भारत और यूरोपीय संघ का सहयोग विश्व के लिए अच्छा कदम है और बहुपक्षवाद व अंतरराष्ट्रीय मानकों का सम्मान उनकी साझा परंपरा है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि आज की चुनौतियों का समाधान करने के लिए वैश्विक संस्थानों में सुधार आवश्यक है। यह बयान संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन और अन्य बहुपक्षीय संस्थानों में सुधार की बात को लंबे समय से चली आ रही मांग को यूरोपीय समर्थन मिलने का संकेत देता है। इस महाडील का एक और महत्वपूर्ण पहलू वह है जिसे आप्रत्यक्ष प्रतिबंधों और टैरिफ अवरोधों

के संदर्भ में देखा जा रहा है। हाल के वर्षों में भारतीय उद्योग जनत को कई देशों द्वारा लगाए गए टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं का सामना करना पड़ा है। इन बाधाओं को कई विश्लेषक टैरिफ रूपी स्पीड ब्रेकर के रूप में देखते हैं, जिनका उद्देश्य भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता को सीमित करना था। भारत-ईयू एफटीए इन अवरोधों को काफी हद तक तोड़ने में सक्षम होगा और भारतीय उद्योगों को वैश्विक बाजार में अधिक आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का अवसर देगा।

साथियों हम इस डील को गहराई से देखें तो यह डील विशेष रूप से उन क्षेत्रों के लिए मील का पथर साबित हो सकती है, जहाँ भारत को तकनीक, पूंजी और बाजार की आवश्यकता है, जबकि यूरोपीय को लागत-प्रभावी उत्पादन, युवा कार्यबल और तेजी से बढ़ते बाजार की जरूरत है। दोनों की यह पूरकता इस समझौते को दीर्घकालिक सफलता की ओर ले जा सकती है। इसके साथ ही, यह समझौता वैश्विक निवेशकों के लिए भी सकारात्मक संकेत भेजता है कि भारत स्थिर, विश्वसनीय और सुधारोन्मुख शानदार अर्थव्यवस्था है।

साथियों अंतरराष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में देखें तो यह महाडील भारत को एक संतुलनकारी शक्ति के रूप में स्थापित करती है। अमेरिका और चीन के बीच बढ़ते तनाव के बीच भारत और यूरोपीय संघ यह संयोग वैश्विक व्यवस्था में एक तीसरा, अधिक स्थिर और नियम- आधारित विकल्प प्रस्तुत करता है। यह न केवल आर्थिक, बल्कि राजनीतिक और नैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि दोनों पक्ष लोकातांत्रिक मूल्यों, कानून के शासन और अंतरराष्ट्रीय नियमों में विश्वास रखते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारत-यूरोपीय संघ महाडील 21वीं सदी की बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत की रणनीतिक सोच, आर्थिक आत्मविश्वास और कूटनीतिक परिपक्वता का प्रमाण है। यह समझौता भारत को केवल एक बड़ा बाजार नहीं, बल्कि एक वैश्विक नीति-निर्माण के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। आने वाले वर्षों में इसका प्रभाव न केवल व्यापार के आँकड़ों में, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देगा। यही मंदर ऑफ ऑल डील कहा जाना पूरी तरह से सार्थक प्रतीत होता है।

गैर दलीय नगर निकाय चुनाव घोषणा के साथ गरम हुई झारखंड की राजनीति

प्रेस कॉन्फ्रेंस कर निर्वाचन अधिकारी अलका तिवारी ने दी जानकारी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची, झारखंड में नगर निकाय चुनाव की घोषणा हो गई है। रांची में आयोजित प्रेस वार्ता में राज्य निर्वाचन आयुक्त अलका तिवारी ने बताया कि झारखंड के 48 नगर निकायों में 23 फरवरी को चुनाव होंगे। वहीं मतगणना 27 फरवरी को होगी। चुनाव गैर दलीय आधार पर है।

चुनाव की घोषणा के बाद से ही राज्य में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है। यह सिर्फ निकाय क्षेत्रों पर प्रभावी रहेगी। एक अक्टूबर, 2024 तक बने सभी मतदाता वोट कर सकेंगे। यानी जिस मतदाता सूची से विधानसभा चुनाव हुआ था, उसी से नगर निकाय चुनाव भी होगा।

राज्य के कुल 48 नगरपालिकाओं में 9 नगर निगम, 20 नगर परिषद तथा 19 नगर पंचायतों के कुल 1087 वार्डों में वार्ड पार्षदों तथा उक्त सभी नगरपालिकाओं के महापौर/अध्यक्ष का प्रत्यक्ष निर्वाचन होना है। उपमहापौर / उपाध्यक्ष का पद अनाश्रित है, जिस पर अप्रत्यक्ष निर्वाचन होगा।

नगर निकाय चुनाव मतपत्र एवं



मतपत्रिका के द्वारा सम्पन्न कराया जाएगा। इस निमित्त संबंधित जिला निर्वाचन पदाधिकारी (नगरपालिका)-सह-उपायुक्त को पर्याप्त संख्या में मतपत्रिका उपलब्ध करा दिया गया है। सभी जिला निर्वाचन पदाधिकारी यानी नगरपालिका अधिकारी-सह-उपायुक्त को निर्देश दिए जा चुके हैं कि निर्वाचन हेतु समुचित संख्या में मतपत्रियों को तैयार रखा जाए एवं मतदान कर्मियों/मतगणना कर्मियों को मतपत्रिका के परिचालन हेतु समुचित प्रशिक्षण दे दिया जाए।

इस निर्वाचन हेतु स्थापित कुल मतदान केंद्रों की संख्या 4304 है, जो

कुल 2129 भवनों में अवस्थित है राज्य निर्वाचन आयोग ने सभी जिलों के जिला निर्वाचन पदाधिकारी को यह सुनिश्चित करने के लिए आदेश दिया है कि प्रत्येक मतदान केंद्र में आधारभूत न्यूनतम सुविधाएँ जैसे पेयजल, शौचालय, दिव्यांग मतदाताओं के लिए रैम्प, प्रकाश आदि की व्यवस्था की जाएगी।

चुनाव गैर-दलीय आधार पर होंगे, लेकिन सभी प्रमुख बजट (जेएमएम, भाजपा, कांग्रेस आदि) शहरी क्षेत्रों में दबदबा कायम करने की कोशिशों में जुटे हैं। राजनीतिक हलकों में इसे राज्य की शहरी राजनीति का 'सेमीफाइनल' माना जा रहा है।

जिस लाठी ने साम्राज्य को हिला दिया: पंजाब केसरी लाला लाजपत राय

-सुनील कुमार महला

28 जनवरी को महान स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, आर्य समाज के प्रमुख विचारक तथा प्रखर राष्ट्रवादी नेता लाला लाजपत राय की जयंती मनाई जाती है। अपनी ओजस्वी वाणी, निर्भीक तेवर और अंग्रेजी हुकूमत के सामने कभी न झुकने वाले व्यक्तित्व के कारण वे जन्मानस में 'पंजाब केसरी' (पंजाब का शेर) के नाम से विख्यात हुए। उनकी गर्मना (ओजस्वी भाषण) इतनी प्रभावशाली होती थी कि सभाओं में उपस्थित हजारों लोग एक ही आह्वान पर उनके पीछे चल पड़ते थे। निरसंदेह, वे भारतीय इतिहास के उन तेजस्वी सितारों में से एक हैं जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को पंजाब के फिरोजपुर जिले के घुडीके गाँव (तत्कालीन पंजाब, ब्रिटिश भारत) में हुआ था। उनके पिता मुंशी राधाकृष्ण उर्दू-फारसी के विद्वान थे तथा माता गुलाब देवी एक धार्मिक एवं संस्कारवादी महिला थीं। प्रारंभिक शिक्षा के बाद उन्होंने लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज से कानून की पढ़ाई की। इसी दौरान वे स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों से अत्यंत प्रभावित हुए और लाहौर में आर्य समाज से जुड़ गए। लाला जी का मानना था कि हिंदू धर्म का नैतिक आदर्शवाद जब राष्ट्रवाद के साथ जुड़ता है, तब वह एक

धर्मनिरपेक्ष राज्य (सेकुलर स्टेट) की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करता है। शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण अत्यंत प्रगतिशील था। वे दृढ़ता से विश्वास करते थे कि बिना शिक्षा के कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। इसी सोच के परिणामस्वरूप उन्होंने युवाओं को राष्ट्रसेवा के लिए तैयार करने हेतु 'सेवेंट्स ऑफ द पीपल सोसाइटी' की स्थापना की तथा लाहौर में 'नेशनल कॉलेज' की शुरुआत की, जहाँ आगे चलकर भगत सिंह जैसे महान क्रांतिकारियों ने शिक्षा प्राप्त की। वे सामाजिक सुधारों के प्रबल समर्थक थे। 1890 के दशक के अंत में जब भारत के कई भागों में भीषण अकाल पड़ा, तब लाठी ने राहत कार्यों का नेतृत्व किया और अनाथ बच्चों के लिए अनेक राहत शिविर एवं अनाथालय स्थापित कराए। वे विधवा पुनर्विवाह, स्त्री शिक्षा और छुआछूत उन्मूलन के लिए सक्रिय रूप से कार्यरत रहे। राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्रपाल के साथ मिलकर उन्होंने उग्र राष्ट्रवादी नेताओं की प्रसिद्ध त्रयी 'लाल-बाल-पाल' का गठन किया। वे इस त्रयी के प्रमुख स्तंभ थे। वे हिंदू महासभा से भी जुड़े रहे और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध मुक़दर रहे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य के रूप में उन्होंने पंजाब के अनेक राजनीतिक आंदोलनों का नेतृत्व किया। वर्ष 1907 में अंग्रेज सरकार ने उन्हें

आंदोलनकारी गतिविधियों के कारण बर्मा निर्वासित कर दिया, किंतु पर्याप्त प्रमाण न होने के कारण कुछ महीनों बाद उन्हें रिहा कर दिया गया। कम लोगों को ज्ञात है कि 1914 से 1919 तक लाला लाजपत राय अमेरिका में रहे। वहाँ उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहुँचाया और ब्रिटिश शासन के अत्याचारों से अमेरिकी जनता को अवगत कराया। इसी दौरान उन्होंने 1917 में 'होम रूल लीग ऑफ अमेरिका' की स्थापना कर अंतरराष्ट्रीय समुदाय से भारत की स्वतंत्रता के लिए नैतिक समर्थन माँगा। उन्होंने बंगाल और जलियाँवाला बाग हत्याकांड की तीखी निंदा की। वे अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में उन्होंने महात्मा गांधी के अस्वयंयोग आंदोलन का समर्थन किया। वर्ष 1926 में वे केंद्रीय विधानसभा के उप-नेता चुने गए। 1928 में जब ब्रिटिश सरकार ने बिना भारत भेजा, तो लाला लाजपत राय ने विधानसभा में इसका विरोध प्रस्ताव रखा और लाहौर में इसके खिलाफ शांतिपूर्ण प्रदर्शन का नेतृत्व किया। इसी दौरान उन्होंने ऐतिहासिक नारा दिया- 'साहमन वापस जाओ' (साहमन गो बैक)। लाहौर में साहमन कमीशन के विरोध के दौरान पुलिस अधीक्षक जेम्स स्कॉट के

आदेश पर उन पर निर्मम लाठीचार्ज किया गया। गंभीर चोटों के बावजूद उन्होंने अंग्रेज सरकार से कभी क्षमा नहीं माँगी। लाठीचार्ज से पूर्व उनका दिया गया वाक्य- 'मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत में कील बनेगी।' बाद में ऐतिहासिक सत्य सिद्ध हुआ। चोटों के कारण 17 नवंबर 1928 को लाहौर में उनका निधन हो गया। लाला जी की शहादत से क्षुब्ध होकर ही भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव ने अंग्रेज आधिकारी सैंडर्स को मारकर प्रतिशोध लिया। लाला लाजपत राय न केवल एक निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी थे, बल्कि वे भारत को आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक रूप से सशक्त बनाने वाले दूरदर्शी चिंतक भी थे। उनकी लेखनी भी उतनी ही प्रखर थी- यंग इंडिया, अहंमपी इंडिया, भारत का इंग्लैंड पर आरोप, इंडिया विल टू फ्रीडम, भगवद्गीता का संदेश सहित अनेक कृतियाँ उनके विचारों की अमिट धरोहर हैं। वे पंजाब प्रेस बोर्ड के सह-संस्थापक, आर्य गजट के संपादक और कई शिक्षण-सामाजिक संस्थाओं के प्रेरणास्रोत रहे। अंततः कहा जा सकता है कि पंजाब केसरी लाला लाजपत राय शहादत की वह मशाल हैं, जिनकी लौ भारतीय राष्ट्रवाद को सदैव प्रकाशित करती रहेगी-उन्हें भुला पाना असंभव है।

सुनील कुमार महला, फ़्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार,

आशा-आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का स्वैच्छिक योगदान।

-डॉ. प्रियंका सोरभ

भारत के ग्रामीण समाज में महिला सशक्तिकरण, पोषण और स्वास्थ्य काफ़ी हद तक आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं पर निर्भर करता है। ये वे महिलाएँ हैं जो घर-घर जाकर टीकाकरण करती हैं, बच्चों में कुपोषण का पता लगाती हैं, गर्भवती महिलाओं को सुरक्षित प्रसव में सहायता करती हैं और मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कोविड-19 जैसी महामारियों में इन्हें अग्रिम पंक्ति के सैनिकों की तरह इस्तेमाल किया गया था, लेकिन आजकल ये महिलाएँ सड़कों पर हैं, उनका रोल वे पश्चिम बंगाल का सियालदह संलवे स्टेशन या कर्नाटक का फ़ाउंटैन चौक है। उनकी स्थिति भी बेहतर नहीं है: क्या राष्ट्र के स्वास्थ्य को देखभाल करने वाली इन महिलाओं को श्रमिक का दर्जा नहीं दिया जाएगा?

आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की जरूरतें असाधारण नहीं हैं, उन्हें न्यूनतम वेतन, पेंशन, ग्रेज्युटी, तृतीय श्रेणी कर्मचारी का दर्जा और सामाजिक सुरक्षा प्रदान है। फिर भी, सरकारों उन्हें औपचारिक श्रम अधिकारों से वंचित रखती हैं और उन्हें स्वयंसेवक या परियोजना कार्यकर्ता कहती

हैं। दिसंबर 2025 से जनवरी 2026 तक हुई देशव्यापी हड़तालें इस दीर्घकालिक उपेक्षा की सार्वजनिक अभिव्यक्ति का एक उदाहरण हैं।

सन्-1975 में आईसीडीएस और सन्-2005 में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत आंगनवाड़ी योजनाओं और आशा योजना शुरू की गईं। इसका उद्देश्य स्थानीय महिलाओं की भागीदारी से ग्रामीण स्वास्थ्य और पोषण प्रणालियों को सशक्त बनाना था। शुरुआत में, सरकारी खर्च को सीमित करने के लिए स्वैच्छिक प्रणाली अपनाई गई थी, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि ये कार्यरत हैं। आशा कार्यकर्ता को 1,000 लोगों की देखभाल करने की है, जबकि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता गर्भवती महिलाओं के साथ-साथ 40 बच्चों की देखभाल, पोषण वितरण और रिकॉर्ड रखने का काम करती हैं।

2006 में सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि वैधानिक पदों पर न होने के कारण वे सरकारी कर्मचारी हैं, लेकिन इस फैसले को नवर-नवर चर कर दिया गया। हालाँकि, 2022 के एक फैसले में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को 2013 के आईसीडीएस अधिनियम के अनुसार

ग्रेज्युटी का अधिकार दिया गया। बाद में, 2024 में गुजरात उच्च न्यायालय ने समानता के सिद्धांत के आधार पर उन्हें राज्य कर्मचारी के रूप में स्वीकार किया, जबकि कलकत्ता उच्च न्यायालय ने पदोन्नति के मुद्दे पर विचार करने का निर्देश दिया। इसके बावजूद, केंद्र और राज्य की नीतियाँ असंगत और अनिश्चित हैं। मानदेय का प्रचलन शर्मनाक है। आशा कार्यकर्ताओं को 3,500 से 6,000 के बीच न्यूनतम मानदेय मिलता है, और वह भी प्रोत्साहन राशि पर आधारित है। कर्नाटक में 6,000 का मानदेय निर्धारित है, लेकिन इसका भुगतान आठ-नौ महीने देरी से होता है। आंगनवाड़ी पेंशनधारियों को औसतन 15,000 मिलते हैं। कोई अवकाश नहीं, कोई परिवहन भत्ता नहीं, उचित व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण नहीं। मातृत्व अवकाश भी बहुत कम है, और कार्यभार लगातार बढ़ता रहता है।

चूँकि यह शब्द स्वयंसेवकों पर लागू होता है, इसलिए वे न्यूनतम मजदूरी अधिनियम 1948, समान परिश्रमिक अधिनियम 1976 और चार नए श्रम कानूनों के दायरे से बाहर हैं। 45वें भारतीय श्रम सम्मेलन में न्यूनतम मजदूरी के लिए ₹26,000 की सिफारिश अभी तक लागू नहीं की गई है।

ईपीएफ और ईएसआई जैसी कोई सामाजिक सुरक्षा योजना नहीं है। सेवानिवृत्ति पेंशन में ₹71,200 की वृद्धि की मांग वर्षों से बनी हुई है, लेकिन इस पर कोई कार्रवाई नहीं की गई है। ई-श्रम कार्ड को पत्राचार प्रदान नहीं करता, बल्कि केवल डेटा एकत्र करता है।

विडंबना यह है कि देश में कुपोषण और शिशु मृत्यु दर को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली महिलाएँ स्वयं ही असुरक्षित हैं। एनएफएस-5 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 35 प्रतिशत बच्चे बौनेपन के शिकार हैं और शिशु मृत्यु दर प्रति हजार 28 है। आशा कार्यकर्ताओं और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने इन आँकड़ों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कोविड-19 के दौरान 500 से अधिक कर्मचारी शहीद हो गए और मुआवजे की घोषणा भी की गई, लेकिन भुगतान में भारी देरी हुई। मानसिक तनाव, कार्यभार और हरियारा जैसे राज्यों में 20 प्रतिशत रिक्त पदों के कारण स्थिति और भी खराब हो गई है।

यह एक राजनीतिक स्तर की समस्या है जिसे स्वीकार किया गया है। 16 दिसंबर 2025 को राज्यसभा में सोनिया गांधी ने इस मुद्दे को उठाया था। बजट 2026 में कुछ



संकेत दिए गए थे, लेकिन कोई निश्चित और बाध्यकारी निर्णय नहीं लिया गया। नियंत्रणों में स्पष्ट कर दिया है कि यदि उनकी मांगें पूरी नहीं हुईं, तो वे और अधिक आंदोलन करेंगे। समाधान ढांचागत होने चाहिए, न कि अधा-अधूरे उपाय। श्रम कानूनों की माध्यम से योजना के तहत कामगारों को कर्मचारी का दर्जा दिया जाना चाहिए। इसके लिए न्यूनतम वेतन 26,000 रुपये,

पेंशन 10,000 रुपये और ईपीएफ अनिवार्य होना चाहिए। केंद्र सरकार को कम से कम 50 प्रतिशत मानदेय का भुगतान करना चाहिए और राज्यों को सभी रिक्त पदों को तुरंत भरना चाहिए। अतिरिक्त समय, मातृत्व अवकाश, स्थायी कार्यस्थल, ऑनलाइन प्रशिक्षण और श्रमिक संघों की मान्यता प्रदान की जानी चाहिए। पंचायतों राज के माध्यम से स्थानीय स्तर पर जवाबदेही सुनिश्चित की जानी चाहिए। आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताएँ कार्यक्रमों में केवल नाममात्र की हस्तियों नहीं हैं, बल्कि लाखों परिवारों की वास्तविक आशा हैं। स्वयंसेवक होने और काम करने के बीच का यह अंतर एक स्पष्ट अन्याय है। गणतंत्र के 77वें वर्ष में, जब भारत वैश्विक नेता होने का दावा करता है, इन महिलाओं के सम्मान का मुद्दा नीतिगत प्रश्न नहीं, बल्कि नैतिकता का संवैधानिक प्रश्न है।

ये प्रदर्शन एक संदेश हैं, न्याय में देरी क्रांति है। आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता किसी भी योजना का पूरक नहीं हैं, बल्कि भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था की रीढ़ हैं। उन्हें स्वयंसेवी कहकर उनके श्रम

अधिकारों से वंचित करना सामाजिक न्याय और संवैधानिक समानता का अपमान है। महामारियों, कुपोषण और मातृ मृत्यु दर से देश को बचाने के लिए अग्रिम पंक्ति में खड़ी होने वाली महिलाएँ वर्तमान स्थिति में स्वयं असुरक्षित हैं। ये प्रदर्शन इस बात का संकेत हैं कि समय कम होता जा रहा है। यदि गणतंत्र को मजबूत करना है तो इन महिलाओं को सम्मान, सुरक्षा और अधिकार मिलने चाहिए। न्याय में देरी संभव है, लेकिन उससे बचा नहीं जा सकता। आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता किसी भी योजना में योगदान नहीं दे रही हैं, लेकिन वे भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र की रीढ़ हैं। उन्हें स्वयंसेवक कहकर श्रम अधिकार देने से इनकार करना सामाजिक न्याय और संवैधानिक समानता का अपमान है। जिन महिलाओं ने महामारियों, कुपोषण और मातृ मृत्यु दर से देश को बचाने के लिए काम किया, वे आज खुद असुरक्षित हैं। ये प्रदर्शन इस बात का संकेत हैं कि समय बीत रहा है। यदि गणतंत्र को मजबूत करना है तो इन महिलाओं को अधिकार, सुरक्षा और सम्मान मिलना आवश्यक है। न्याय में देरी हो सकती है, लेकिन उससे बचा नहीं जा सकता।



विस्फोट केस में पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन पर आरोप गठित ,चलेगा ट्रायल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड सरायकेला, झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, सरायकेला विधानसभा से लगातार विधायक रहे चंपाई सोरेन चाईबासा स्थित एमपी-एम्बलएट विशेष अदालत में उपस्थित हुए। लगभग तीन दशक पुराने विस्फोट मामले में अदालत ने उनके विरुद्ध आरोप तय कर दिए हैं। इसी के साथ इस लंबे समय से लंबित मामले में औपचारिक रूप से न्यायिक सुनवाई (ट्रायल) की शुरुआत हो गई है, यह मामला वर्ष 1993 में झारखंड मुक्ति मोर्चा द्वारा प्राप्त बंद के दौरान कथित तौर पर विस्फोटक पदार्थों के प्रयोग से जुड़ा हुआ है। मामले में पूर्व सीएम चंपाई सोरेन के साथ-साथ श्याम बंदुल दूडू उर्फ उर्वर दूडू और अग्रज मल्लो का नाम शामिल है। अदालत ने विस्फोटक पदार्थ अधिनियम, 1908 की धारा 4, 5 व 6, तथा भारतीय टैंक संहिता की धारा 120बी (षट्चक्र) और 311 (साथ नष्ट करना/छिपाना) के अंतर्गत आरोप तय किए हैं। सुनवाई के दौरान चंपाई सोरेन ने आरोपों से इनकार करते हुए स्वयं को निर्दोष बताया और अदालत में मुकदमे का सामना करने की सख्ती जताई। मामले से जुड़े विरुद्ध अधिवक्ता अशोक साव ने जांचकारी टी टिक यह प्रकरण गंभीरता से न्यायिक प्रक्रिया में शेष है। अदालत ने आरोपी श्याम बंदुल दूडू की पूर्ण में मिली जमानत को बरकरार रखने का आदेश दिया है। पहले तकनीकी कारणों से जमानत को लेकर असमंजस की स्थिति बनी थी, जिसे अब श्रेयन कोर्ट में मामला स्थगानांतरित होने के बाद स्पष्ट कर दिया गया है। पुलिस के अनुसार 18 सितंबर 1993 को आजाति झारखंड बंद के दौरान आंदोलन को उग्र रूप देने के लिए कथित तौर पर विस्फोटक साधनों का उपयोग किया गया था, इसी घटना के आधार पर गंभीरता से न्यायिक प्रक्रिया में शेष है। अदालत ने आरोपी श्याम बंदुल दूडू की पूर्ण में मिली जमानत को बरकरार रखने का आदेश दिया है। पहले तकनीकी कारणों से जमानत को लेकर असमंजस की स्थिति बनी थी, जिसे अब श्रेयन कोर्ट में मामला स्थगानांतरित होने के बाद स्पष्ट कर दिया गया है। पुलिस के अनुसार 18 सितंबर 1993 को आजाति झारखंड बंद के दौरान आंदोलन को उग्र रूप देने के लिए कथित तौर पर विस्फोटक साधनों का उपयोग किया गया था, इसी घटना के आधार पर गंभीरता से न्यायिक प्रक्रिया में शेष है। अदालत ने आरोपी श्याम बंदुल दूडू की पूर्ण में मिली जमानत को बरकरार रखने का आदेश दिया है। पहले तकनीकी कारणों से जमानत को लेकर असमंजस की स्थिति बनी थी, जिसे अब श्रेयन कोर्ट में मामला स्थगानांतरित होने के बाद स्पष्ट कर दिया गया है। पुलिस के अनुसार 18 सितंबर 1993 को आजाति झारखंड बंद के दौरान आंदोलन को उग्र रूप देने के लिए कथित तौर पर विस्फोटक साधनों का उपयोग किया गया था, इसी घटना के आधार पर गंभीरता से न्यायिक प्रक्रिया में शेष है। अदालत ने आरोपी श्याम बंदुल दूडू की पूर्ण में मिली जमानत को बरकरार रखने का आदेश दिया है। पहले तकनीकी कारणों से जमानत को लेकर असमंजस की स्थिति बनी थी, जिसे अब श्रेयन कोर्ट में मामला स्थगानांतरित होने के बाद स्पष्ट कर दिया गया है। पुलिस के अनुसार 18 सितंबर 1993 को आजाति झारखंड बंद के दौरान आंदोलन को उग्र रूप देने के लिए कथित तौर पर विस्फोटक साधनों का उपयोग किया गया था, इसी घटना के आधार पर गंभीरता से न्यायिक प्रक्रिया में शेष है। अदालत ने आरोपी श्याम बंदुल दूडू की पूर्ण में मिली जमानत को बरकरार रखने का आदेश दिया है। पहले तकनीकी कारणों से जमानत को लेकर असमंजस की स्थिति बनी थी, जिसे अब श्रेयन कोर्ट में मामला स्थगानांतरित होने के बाद स्पष्ट कर दिया गया है। पुलिस के अनुसार 18 सितंबर 1993 को आजाति झारखंड बंद के दौरान आंदोलन को उग्र रूप देने के लिए कथित तौर पर विस्फोटक साधनों का उपयोग किया गया था, इसी घटना के आधार पर गंभीरता से न्यायिक प्रक्रिया में शेष है। अदालत ने आरोपी श्याम बंदुल दूडू की पूर्ण में मिली जमानत को बरकरार रखने का आदेश दिया है। पहले तकनीकी कारणों से जमानत को लेकर असमंजस की स्थिति बनी थी, जिसे अब श्रेयन कोर्ट में मामला स्थगानांतरित होने के बाद स्पष्ट कर दिया गया है। पुलिस के अनुसार 18 सितंबर 1993 को आजाति झारखंड बंद के दौरान आंदोलन को उग्र रूप देने के लिए कथित तौर पर विस्फोटक साधनों का उपयोग किया गया था, इसी घटना के आधार पर गंभीरता से न्यायिक प्रक्रिया में शेष है। अदालत ने आरोपी श्याम बंदुल दूडू की पूर्ण में मिली जमानत को बरकरार रखने का आदेश दिया है। पहले तकनीकी कारणों से जमानत को लेकर असमंजस की स्थिति बनी थी, जिसे अब श्रेयन कोर्ट में मामला स्थगानांतरित होने के बाद स्पष्ट कर दिया गया है। पुलिस के अनुसार 18 सितंबर 1993 को आजाति झारखंड बंद के दौरान आंदोल

